

3. धर्मवाद की सामान्य प्रवृत्तियाँ -

- i. वैयक्तिकता
- ii. शैक्षणिकता
- iii. वेदना तथा प्रलयवाद
- iv. अज्ञान रक्त के प्रति आकर्षण
- v. प्रकृति चित्रण
- vi. अस्मिता की अनुभूति पद्धति
- vii. नारी के प्रति नवीन दृष्टिकोण
- viii. प्रकृति का मानवीकरण

4. द्वैतीय युग के सामान्य प्रवृत्तियाँ -

- i. देश भावित
- ii. मानवतावादी दृष्टिकोण
- iii. स्वच्छन्द प्रकृति चित्रण
- iv. इतिहासवाद तथा गद्यवाद
- v. अनुवाद की प्रवृत्ति
- vi. शुद्ध भाषा व व्याकरण
- vii. निष्कर्ष

5. प्रगतिवाद के सामान्य प्रवृत्तियों को लिये -

- i. पूँजीवाद का महत्व
- ii. साम्यवाद का समर्थन
- iii. सांस्कृतिक समन्वय की भावना
- iv. कला पक्ष
- v. औद्योगिकता तथा व्यंग्य का प्रसार
- vi. भाषा शैली
- vii. सामाजिक समस्याओं का चित्रण
- viii. शक्ति की भावना
- ix. निष्कर्ष

6. प्रयोगवाद के सामान्य प्रवृत्तियों को लिये -

- i. विचार विचार द्वारा ही सुनिश्चित

- ii. व्यक्तित्ववाद
- iii. यथार्थवाद
- iv. लघुमानव की महत्त्व
- v. जासना की नयन प्रकृति
- vi. विद्रोह धार्मिकता
- vii. शैलिक पक्ष

7. जैके कविता की सामान्य प्रकृतियाँ :-

- i. व्यक्तित्व स्वतंत्रता
- ii. जासना एवं अनजासना
- iii. उद्योगिक लक्ष्यता
- iv. अनुभूति परकता
- v. प्रकृति चित्रण
- vi. शैलिक विशेषताएँ :-

8. अन्तिकाल के सामान्य प्रकृतियाँ :-

- i. ईश्वर के प्रति उच्छ्रित अनुराग
- ii. गुरु महिमा
- iii. नाम स्मरण की महिमा का जखान
- iv. सामानता की भावना
- v. शास्त्रीय ज्ञान की अपेक्षा लोकानुभव का महत्व
- vi. सत्संगति की भावना
- vii. बहुदेववाद का विरोध
- viii. शमन्वयवादी भावना
- x. नीतिकाल :-

बलराम गुजर